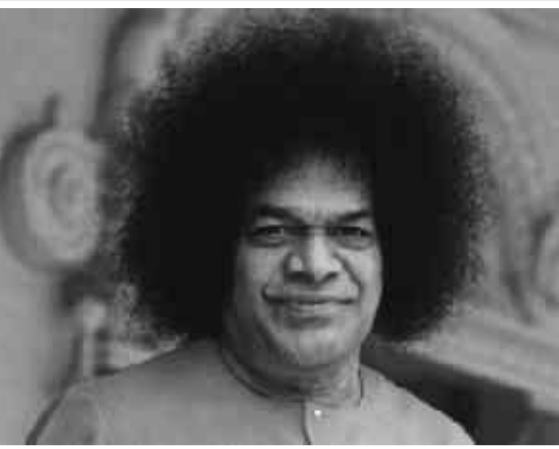


मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 28-03-2016 ● अंक-477 ● तारीख - 29 मार्च 2016, चैत्र कृष्ण - 6 ● मंगलवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रुपया ● पृष्ठ-01

श्री सत्यसाई - अनमोल वचन



अगर कोई ऐसा व्यक्ति, जिसे आप पसंद नहीं करते, आपके पास आए तो हमें उसमें गलती खोजने की आवश्यकता नहीं है। उन पर हँसने या उनकी अवमानना करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यही काफी है कि आप उसके आने से प्रभावित हुए बिना अपना कार्य कर सकें। उन्हें अपने मार्ग का पालन करने दें, उन्हें अकेला छोड़ दीजिए। यही व्यवहार उदासीन भाव कहलाता है, अर्थात् अप्रभावित होना। अगर आप इसका अभ्यास करेंगे, तब आपको भगवान के लिए अपरिवर्तित प्यार प्राप्त होगा। यह व्यवहार आपको चिरस्थायी शांति, आत्म नियंत्रण और मन की शुद्धता भी प्रदान करेगा।

श्लोक - रामचरितमानस

चौकें चारु सुमित्राँ पूरी।
मनिमय बिबिध भाँति अति रूरी।
आनँद मगन राम महतारी।
दिए दान बहु बिप्र हँकारी।।
भावार्थ - सुमित्राजी ने मणियों (रत्नों) के बहुत प्रकार के अत्यन्त सुंदर और मनोहर चौक पूरे। आनंद में मगन हुई श्री रामचन्द्रजी की माता कौशल्याजी ने ब्राह्मणों को बुलाकर बहुत दान दिए।

पूजों ग्रामदेवि सुर नागा।
कहेउ बहोरि देन बलिभागा।
जेहि बिधि होइ राम कल्याण।
देहु दया करि सो बरदानू।।

भावार्थ - उन्होंने ग्रामदेवियों, देवताओं और नागों की पूजा की और फिर बलि भेंट देने को कहा (अर्थात् कार्य सिद्ध होने पर फिर पूजा करने की मनौती मानी) और प्रार्थना की कि जिस प्रकार से श्री रामचन्द्रजी का कल्याण हो, दया करके वही वरदान दीजिए।

मन तो प्रभु की याद में डूबा रहे

तिरिया जिमी पीहर बसत है, सुरत पिया के माहीं,
ऐसे जन जग में रहे, हरी को भूलें नाहीं।

- स्वामी चरण दास जी

स्वामी चरण दास जी महाराज की उपरोक्त, वाणी बड़ी ही सार गर्भित तथा व्यावहारिक है। किसी बहन की नयी-2 शादी हुई है। विवाह के पश्चात वह पहली बार मायके आई है। माता-पिता तथा भाई-बहनों का काम करते समय भी उनका मन अपने पति की याद में ही डूबा रहता। जिसको वह अपना दिल दे आई है। संत जी फरमा रहे हैं कि इस नव-विवाहित वधू की तरह ही हमें संसार में रहना चाहिए। मन तो प्रभु की याद में डूबा रहे और हाथों से जगत के काम होते रहे।

चीन में बेची जा रही है शुद्ध हवा

शुद्ध हवा खरीद लो, यह है प्रकृति की शुद्ध हवा ऐसी आवाजें चीन में सुनाई दे रही है। जी हाँ चीन में पर्यटकों को शुद्ध हवा बेची जा रही है। चीन में औद्योगिक प्रदूषण लगातार बढ़ रहा है जिसके चलते वहाँ के लोगों ने शुद्ध हवा बेचने का व्यवसाय शुरू कर दिया है। चीन के दक्षिणी इलाके में स्थित गुआंगडोंग प्रांत के ग्रामीण इन दिनों पर्यटकों को शुद्ध हवा बेच रहे हैं।



को आकर्षित करने के लिए खास आवाजें लगाते हैं। हवा खरीदना सेहत

कहकर पर्यटकों को बुलाते हैं। लियानशान पहाड़ गुआंगडोंग का वनों से ढका सबसे बड़ा क्षेत्र है। चीन के अधिकतर हिस्सों में औद्योगिक प्रदूषण के चलते धुंध फैलने की घटनाओं के बाद शुद्ध हवा का कारोबार चल निकला है। गुआंगडोंग स्थित लियानशान पहाड़ के इलाके के ग्रामीण इलाके में आने वाले पर्यटकों को लगभग 100 रुपये से 300 रुपये में स्थानीय शुद्ध हवा से भरा बैग बेच रहे हैं।

प्राण फूलों में नहीं, उनकी जड़ों में होते हैं

चीन के महान् नेता माओत्से तुंग ने अपनी जीवनी में लिखा कि मेरे घर में एक बगीचा था। वह इतना सुन्दर था कि लोग देखने आते थे। एक बार माँ बीमार पड़ गई। बीमारी में भी अपने से ज्यादा माँ को बगीचे की चिन्ता थी कि खिले फूल मुरझा न जायें। माओत्से तुंग ने माँ से कहा- तू चिन्ता मत कर, मैं बगीचे की देखभाल कर लूँगा। माँ के स्वस्थ होने तक माओ ने बगीचे की पूरी देखभाल की लेकिन न जाने कैसे फूल मुरझाते गए और सारा बगीचा सूखने लगा।



बहुत फिक्र की। एक-एक पत्ते की धूल झाड़ी और एक-एक फूल पर पानी छिड़का। फिर भी न जाने कैसे..?

ठीक होने पर बूढ़ी माँ बगीचे में आई तो यह देख कर निराश हुई कि बगीचा तो उजड़ गया। माओ से माँ ने पूछा-तू क्या करता रहा पन्द्रह दिनों तक? तूने खाने-पीने की फिक्र भी नहीं रखी, फिर यह कैसे हुआ? माओ ने कहा - मैंने

शाखाओं की नहीं। माओ ने जिज्ञासावश पूछा-लेकिन माँ जड़ें हैं कहाँ? वे तो दिखाई नहीं पड़ी। इसी प्रकार हम सभी पूछते हैं कि जीवन कहाँ है? वह दिखाई तो नहीं पड़ता। असल में जीवन बाहर नहीं है। वह अपने ही भीतर है। जरूरत केवल अन्तर्यात्रा की है।

याददाश्त कमजोर कर सकता है देर तक काम करना

लंबी पारी में काम करने से आप ज्यादा पैसे जरूर कमा सकते हैं, पर यह आपके दिमाग पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इससे आपके दिमाग के काम करने की शक्ति कम हो सकती है और आपकी याददाश्त कमजोर हो सकती है यह बात एक शोध में सामने आई है। शोधकर्ताओं ने बताया कि लंबी पारी में काम करने से शरीर की गतिविधि में रूकावट आती है जो शारीरिक तनाव पैदा कर सकता है, जो आपके दिमाग की गतिविधि को प्रभावित कर सकता है। शोधकर्ताओं ने बताया कि भारी जोखिम भरी स्थितियों में रात में नौकरियों की बढ़ती हुई संख्या न केवल व्यक्ति की सुरक्षा, बल्कि पूरे समाज की सुरक्षा को प्रभावित कर सकती है। इस शोध में पाया गया कि एक बार अगर लोगों ने पारी में काम करना बंद कर दिया तो वे कमजोर याददाश्त की समस्या से छुटकारा पा सकते हैं। लेकिन इसमें पाँच साल तक का लंबा समय लग सकता है।

शोधकर्ताओं ने इस शोध प्रक्रिया में 1996, 2001 और 2006 में 3000 से अधिक ऐसे लोगों से जो विभिन्न क्षेत्रों में या तो काम कर रहे थे या फिर सेवानिवृत्त हो चुके थे, की ज्ञानात्मक क्षमता पर नजर रखी। बताया गया है कि वे लोग जो या तो

पाली में काम कर रहे थे या फिर जिन्होंने पारी में काम किया था, उनकी याददाश्त और दिमाग के कार्य करने की क्षमता उन लोगों की समग्र मस्तिष्क शक्ति से कम थी, जिन्होंने सामान्य दफ्तर समय में काम किया था। विश्लेषण के दूसरे संग्रह में पता चला कि वे लोग जो आवर्ती पारी प्रणाली में काम करते हैं और जिन्होंने 10 या उससे अधिक वर्षों तक इस प्रणाली में काम किया है, उनकी ज्ञानात्मक क्षमता उन लोगों से कम पाई गई, जिन्होंने इस प्रकार की प्रणाली में कभी काम नहीं किया।



गले के रोग होने पर करें ये घरेलू उपचार

हकलाना, तुतलाना - बच्चों का हकलाना, आँवला चबाने से ठीक हो जाता है, जीभ पतली होकर आवाज साफ आने लगती है, एक चम्मच पिसा हुआ आँवला घी में मिलाकर नित्य चाटते रहें। तुतलाना ठीक हो जाएगा। नित्य 2 बादाम भिगोकर, छीलकर, पीसकर, आधी छटाँक (31ग्राम) मक्खन में कुछ दिन तक खाने से लाभ होता है, सोते समय छुहारा दूध में उबाल कर लें। इसे लेने के दो घंटे बाद तक पानी न पीयें। इससे तीखी, मोटी आवाज साफ हो जाएगी।



पान में चना के बराबर कपूर का टुकड़ा रखकर चबाएं और पीक थूकते जाएं। ध्यान रहे पीक पेट में न जाए। मसूड़े फूलना, दर्द होना, टीस उठना आदि होने पर भुना हुआ जीरा और सेंधा नमक समान भाग पीसकर, छानकर मसूड़े पर रगड़ें और लार टपका दें। लाभ होगा। टॉन्सिललाइटिस - गले के रोग तुलसी की माला पहनने से नहीं होते।

अनन्नास खाने से लाभ होता है। सिंघाड़े में आयोडीन अधिक होता है अतः इसका सेवन करना चाहिए। गरम पानी में फिटकरी डालकर गरारें करें। लाभ होगा। गरम पानी में नमक डालकर गरारे करने से टॉन्सिल, गले में सूजन, दर्द में लाभ होता है। टॉन्सिल में जब तक दर्द हो गरारे करते रहे। गर्म पानी में ग्लिसरीन मिलाकर गरारे करने से लाभ होता है। चाय की पत्तियों को उबालकर छानें और उस पानी से गरारें करें, लाभ होगा। गला बैठना, स्वर भंग - गरम पानी में थोड़ा सा नमक मिलाकर कुल्ले करना चाहिए। यह सुबह तथा रात को सोते समय करना चाहिए। मुलहठी को मुंह में रखकर चूसना चाहिए। मुलहठी का सत्व थोड़ा-थोड़ा मुंह में रखकर चूसने से भी लाभ होता है। गला बैठ जाए, गले में ललाई या सूजन हो जाए तो ताजा पानी या गर्म पानी में नींबू निचोड़कर नमक डालकर तीन चार गरारे करने से लाभ होता है।

भोजन की थाली परोसने की कला



कहा जाता है कि आदमी को खुश करने का रास्ता उसके पेट में से जाता है। अतः हर गृहणी को 'भोजन की थाली कैसे पेश की जाए' इस बात का समुचित ज्ञान होना जरूरी है। आइए देखते हैं कि भोजन की थाली कैसे पेश की जानी चाहिए। यह बात कदापि जरूरी नहीं है कि जब तक भोजन की थाली में विविध प्रकार सुस्वादिष्ट व्यंजन नहीं होंगे तब तक भोजन की उस थाली को कोई पसंद नहीं करेगा। साधारण-सा भोजन भी यदि घर के सदस्यों को प्रतिदिन मधुर मुस्कान व सलीकें के साथ पेश किया जाए और साथ में बिन मांगे गिलास व पानी का जग जैसी जरूरी चीजें रख दी जाएं और सलाद, अचार, पापड़, दही में से कोई एक, दो या तीन अथवा सभी चीजें अपने बजट व खाने वाली की इच्छा के अनुरूप उपलब्ध करा दी जाएं तो भोजन करने वाला आपसे प्रसन्न और प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा। इसके ठीक विपरीत आपने खाना तो सुस्वादिष्ट व विविध प्रकार का बनाया है, पर आपने अप्रसन्न भाव से व अव्यवस्थित रूप से भोजन की थाली पेश की है तो आपकी मेहनत पर निश्चय ही पानी फिर जाएगा। मान लीजिए कि आप पानी का जग, गिलास, खाने वाले की आदत के अनुसार सलाद, अचार, पापड़ और दही में से कोई भी एक चीज भूल कर दूसरे कामों में व्यस्त हो गईं और खाना खाने वाले को स्वयं इन चीजों के लिए खाना छोड़कर उठना पड़ा तो वह क्रोधित भी हो सकता है, इसलिए गृहिणियों को सुस्वादिष्ट व विविध प्रकार के व्यंजन हों या साधारण-सा खाना, इन छोटी-छोटी बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिए।

मानव मन के बोल

कर्म ही पूजा है



गातांक से आगे.....

मैंने कहा थोड़ा अदरक और नींबू को काट करके देखो। बाद में उनकी खांसी बढ़ गई। महिनें भर बाद मालूम पड़ा उनको टी.बी. हो गई है। 9 महिनें तक दवायें लेते रहें। क्या गर्व करते हैं? किस बात का गर्व करते हैं? ये धन, लक्ष्मी भी जी चंचल है कभी लक्ष्मी जी आपके बंगले पर बिराजने की कृपा करती है। कभी आपसे रूठ जायेगी तो कुछ नहीं रहेगा। हमने तो देखा है कभी गर्व मत कीजिये। लक्ष्मी जी के कई स्वरूप हैं - रोटी, कपड़ा, मकान एक स्वरूप, दाल-रोटी खायें प्रभु के गुण गायें। यदि बाहर कोई बारिश में भीग रहा हो तो अपने छाते के नीचे उसे शरण दे दीजिये। सन्तोष रूपी धन को रखिये। लक्ष्मीजी का दूसरा स्वरूप सन्तोषी सदा सुखी। लालची मत बनियें। पाप का बाप लोभ, लोभी मत बनियें। ये लोभ का पूरा परिवार होता है। लोभ जब पूरा नहीं होता है तो गुस्सा आता है। गुस्सा आता है तो मति भ्रम हो जाता है। मति भ्रम हो जाता है तो स्मृति नष्ट हो जाती है। और स्मृति नष्ट हो जाती है तो आदमी नष्ट हो जाता है। किसके लिये करे? क्यों करे? दाल-रोटी ईमानदारी से खूब मिल जाती है। सरकारी नौकरी में भी साल का 8/- रुपया इन्क्रीमेंट लगता था। इन्तजार करते थे कब 31 दिसम्बर आये 8/- रुपया बढ़े, 8/- रुपया बहुत प्यारा लगता था। उन्हीं दिनों में रोहट गया एक डेपुटेशन पर, पोस्ट ऑफिस में कई सिंगल हेंडेड पोस्ट ऑफिस में। वोही बैंक खोलगा, वोही डाक छाटेगा, एक पोस्टमैन भी होता है। उनके पास। सिंगल हेंडेड सब पोस्टमास्टर घर से चाबी लायेगा पोस्ट ऑफिस खोलेंगे। एक पोस्टमैन ए.डी.डी.ओ. होता है। जहां सिंगल, डबल पोस्ट ऑफिस होता है वहां एक्ट्र डिपार्टमेन्टल। तो रूठ वाले ने छुट्टी की एप्लीकेशन दी सुपरवाइजर साहब ने उनकी छुट्टी स्वीकृत कर दी। हमारे पोस्ट मास्टर साहब को लिख दिया इतनी तारीख से इतनी तारीख तक लोड भेजिये।

क्रमशः अगले अंक में ...

सम्पादकीय

नारायण सेवा संस्थान के अन्तर्गत किये गये नियमित निःशुल्क दिव्यांग ऑपरेशन की सूची

क्रं.स.	रोगी का नाम	पिता/पति का नाम	उम्र	लिंग	शहर	राज्य
1.	विवेक कुमार	रामवीर किसान	11	पुरुष	हरदोई	उत्तरप्रदेश
2.	गोलू सरोज	अशोक कुमार	11	पुरुष	मिर्जापुर	उत्तरप्रदेश
3.	अनमोल चौरसिया	राजकुमार	13	पुरुष	जबलपुर	मध्यप्रदेश
4.	जितेश कुमार	सुनील कुमार	14	पुरुष	फिरोजाबाद	उत्तरप्रदेश
5.	भाग्यवान	अश्वनी	14	पुरुष	रायबरेली	उत्तरप्रदेश
6.	राजेश जागिड़	राधेश्याम	14	पुरुष	टोंक	राजस्थान
7.	रेखा कुमारी	कैलाश नारायण	14	स्त्री	दौसा	राजस्थान
8.	सुनंदा प्रमाणिक	सोमनाथ	15	स्त्री	नॉर्थ 24 परगना	पं. बंगाल
9.	शुभेष्ठा प्रमाणिक	सोमनाथ	15	स्त्री	नॉर्थ 24 परगना	पं. बंगाल
10.	नजमा खातुन	रफीकूल	16	स्त्री	नॉर्थ 24 परगना	पं. बंगाल
11.	दीपांशु त्यागी	नरेन्द्र कुमार	17	पुरुष	मैरठ	उत्तरप्रदेश
12.	ताराचंद कोरी	धर्मपाल	18	पुरुष	बदायूँ	उत्तरप्रदेश

:अ.क.

पौष्टिक खुराक से बालों को रखें सेहतमंद



खूबसूरत और हैंडसम दिखने के लिए आज के नौजवान अपने बालों पर कई तरह के प्रयोग करते रहते हैं। अगर आप भी ऐसा करते हैं तो सावधान हो जाएं। इससे आपके बालों को नुकसान पहुंच सकता है।

बालों की समस्या आजकल आम होती जा रही है, लेकिन कुछ बातों और हेयर स्पा को अपना कर बालों को सेहतमंद रखा जा सकता है।

खूबसूरत और हैंडसम दिखने के लिए आज के नौजवान अपने बालों पर कई तरह के प्रयोग करते रहते हैं। अगर आप भी ऐसा करते हैं तो सावधान हो जाएं। इससे आपके

बालों को नुकसान पहुंच सकता है। तरह-तरह के हेयर कट, हेयर जैल और हेयर कलरिंग इत्यादि से प्रारंभ में बाल खूबसूरत जरूर दिखते हैं, लेकिन बाद में बालों को संवारने के लिए किया गया यही जतन उनकी सेहत के लिए महंगा साबित हो सकता है। बदलता मौसम आप के बालों के लिए सबसे खराब समय होता है।

इस दौरान रूसी, बालों के उलझाव, टूटने, कठोर होने तथा जड़ों से उखड़ने जैसी अनेक समस्याओं से आपके बालों को जूझना पड़ता है।

बालों के लिए नुकसानदेह :- असंतुलित भोजन, शारीरिक स्वास्थ्य में खरीबी, अनियमित जीवनशैली, सौंदर्य प्रसाधनों का अनुचित इस्तेमाल और गलत हेयर स्टाइल का चयन करने से बाल झड़ने लगते हैं। उपरोक्त अनियमितताएं बालों की समस्याओं के लिए मुख्य कारण हो सकती हैं।


खान-पान में शामिल करे :- बालों को सेहतमंद रखने के लिए ज्यादा पौष्टिक खुराक लेनी चाहिए। जितना हो सके होलग्रेन और ड्राई फ्रूट का सेवन करें, क्योंकि इनमें बायोटीन की मात्रा अधिक होती है। आप प्रोटीन युक्त हेयर पैक का इस्तेमाल कर सकते हैं।

श्री कृष्ण ही आकर्षण का केन्द्र

‘कृष्ण’ का मतलब जो सबसे अधिक आकर्षक है – वह शक्ति जो सब कुछ अपनी ओर खींचती है। कृष्ण वह निराकार केन्द्र है जो सर्वव्यापी है। कोई भी आकर्षण, कहीं से भी हो, कृष्ण से ही है। प्रायः व्यक्ति आकर्षण के मूल सत्त्व को नहीं देख पाते और बाहरी आवरण में उलझे रहते हैं। और जब तुम बाहरी आवरण को प्राप्त करने की चेष्टा करते हो, कृष्ण तुम्हें चकमा देते हैं और तुम्हारे हाथों में रह जाता है खोखला आवरण और आखों में आँसू। राधा की तरह चतुर बनो, कृष्ण की छल में मत आओ। कृष्ण राधा से दूर हो ही नहीं सके क्योंकि राधा की पूरी सृष्टि ही कृष्णमय थी। अगर तुम हर आकर्षण में कृष्ण को देख सको, तब तुम राधा ही हो, अपने आप में केन्द्रित हो। मन सौन्दर्य, आनन्द व सत्य की ओर बढ़ता है। कृष्ण अर्जुन से कहते हैं, “मैं सुन्दरता में सौन्दर्य हूँ, सशक्त में शक्ति हूँ और ज्ञानी में ज्ञान हूँ।” इस प्रकार वे मन को अपने से दूर भटकने से रोकते हैं।



— श्री श्री रविशंकर जी



ज्ञान गंगा

- गहराई से श्वास छोड़ने पर एक प्रकार से हम अपनी मनोदशाओं को बाहर फेंक देते हैं।
- श्वास को नियंत्रित कर हम बहुत कुछ अपने मन को भी नियंत्रित कर सकते हैं। हम श्वास को परिवर्तित करके बहुत कुछ अपने विचारों को परिवर्तित करके बहुत कुछ अपने विचारों को अपनी सोच को परिवर्तित कर सकते हैं।
- तीन तत्वों को जोड़ना ही योग है। ये तीन तत्व हैं—शरीर, मन और आत्मा। जब ये तीनों जुड़कर एक ही दिशा में सक्रिय हो जाते हैं, तब आदमी अपनी क्षमता के चरम पर होता है।
- यह प्रकृति से प्राप्त वैज्ञानिक तथ्य है कि नुकीली वस्तुओं से ऊर्जा ग्रहण की जाती है और नुकीली वस्तुओं से ही ऊर्जा बाहर जाती है।
- मन तो एक दर्पण है। उस दर्पण के सामने जैसा दृश्य लाया जाएगा, उसी का प्रतिबिम्ब वह मन दिखाएगा।



सत्संग

चैनल पर सीधा प्रसारण

सादर आमंत्रण

अपंग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध, वंचितजनों एवं विमर्दितां की सेवा में सतत सेवारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

सहाय्यार्थ

श्रीमद् भागवत कथा

आयोजक

भागवत कथा रसिक सत्संग मण्डल, गंजबासोदा

दिनांक एवं समय
7 से 13 अप्रैल 2016
दोपहर 3 बजे से सांय 6.30 बजे तक

स्थान : काशी गार्डन महाराणाप्रताप चौक,
न्यू बस स्टैंड बरैठ रोड, गंजबासोदा, जिला- विदिशा (म.प्र.)

कथा व्यास: पुज्य श्री प्रमेहनन्द जी महाराज

व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द सं आजस्वी रसमयी मधुरवाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान करावेंगे। आपश्री से अनुरोध है कि सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।

स्थानीय सम्पर्क सूत्र: 9893804333, 9098995883
संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999

:: 'निःशक्तजन' की सेवा-सहयोग के प्रति समर्पित ::

 कैलाश 'मानव' मैनेजिंग ट्रस्टी एवं संस्थापक नारायण सेवा संस्थान	 कमला देवी कोषाध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान	 प्रशान्त अग्रवाल अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान	 वन्दना निदेशक नारायण सेवा संस्थान
--	---	---	---

 जगदीश आर्य ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान	 देवेन्द्र चौबीसा ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान
---	--

भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी
कृपा सपरिवार अवश्य पधारें।

समग्र कर्म का महत्व

किसी वृद्ध और किसी युवा में कोई मौलिक अंतर नहीं होता, क्योंकि दोनों अपनी ही आकांक्षाओं और परितुष्टिओं के दास होते हैं। परिपक्वता का आयु से कुछ लेना-देना नहीं होता है। वह तो सूझबूझ से आती है। युवाओं में जिज्ञासा की उत्कण्ठ भावना शायद बहुत सहज रूप में होती है, क्योंकि वयोवृद्ध लोगों का तो जीवन चूर-चूर कर चूका होता है, द्वंद्वों के कारण वे चूक गए होते हैं। कितने ही वयस्क लोग अपरिपक्व, बल्कि बचकाने होते हैं और यह बात विश्वव्याप्त विभ्रम और दुख को बढ़ाने वाले कारणों में से एक है। वयस्क लोग ही हैं, जो आर्थिक और नैतिक अव्यवस्था के हावी रहने के लिए जिम्मेदार हैं। हमारी दुर्भाग्यपूर्ण दुर्बलताओं में से एक यह है की हम चाहते हैं कि हमारे लिए कोई और हमारे जीवन की दिशा व दशा बदल दें। ये सुरक्षा और सफलता ही हैं, जिनके पीछे हममें से अधिकतर लोग पड़े रहते हैं। वह मन जो सुरक्षा चाहता है, सफलता का दीवाना है, वह प्रज्ञाशील नहीं होता और इसीलिए वह कोई भी कर्म समग्र रूप से करने में अक्षम रहता है।

“एक बनेंगे, नेक बनेंगे।”

आपसी एकता, आपसी मजबूती हमारा राष्ट्र आज भी महान है, कल भी महान था। एक युग में इण्डोनेशिया भी हमारा हिस्सा था, जावा, सुमात्रा, बर्मा देश, नेपाल देश, पाकिस्तान तो 1947 में अलग हुआ महाराज। बांग्लादेश तो बाद में बना, पहले पाकिस्तान का टुकड़ा बना, भारत कमजोर पड़ गया। क्यों कमजोर पड़ गया, क्योंकि हमारी एकता टूट गई।

कई लोगों ने सोचा, हम बलवान हैं। कमजोर को कहा, छुआछूत की महामारी फैल गई। बहुत बड़ी बीमारी है ये, सबसे बड़ी बीमारी हैं मनुष्य का मनुष्य से नफरत करना, इस बीमारी को मत अपनाइये। एक बार एक ऋषि ने क्रोधित होकर कहा— ऐ दुष्ट, अरे नालायक, तू मुझे छू गया, मुझे वापस स्नान करना पड़ेगा। उसने कहा, महाराज आपको तो एक बार स्नान करना पड़ेगा, मुझे तो चार बार स्नान करना पड़ेगा। उसने कहा, महाराज आपको तो एक बार स्नान करना पड़ेगा। आप मुझसे छू गये। बोले—

क्रमशः



अनमोल वचन

मन-वाणी-कर्म से बुराई रहित होकर हम विश्व की सेवा कर सकते हैं यथाशक्ति भलाई के द्वारा निकटवर्ती जन-समाज कीय भलाई के फल और अभिमान को छोड़कर अपनी सेवा तथा सोई हुई स्मृति और प्रियता जगाकर प्रभु की सेवा कर सकते हैं। करुणा का रस जब तक नहीं आएगा तब तक सुख-भोग की रुचि नष्ट होगी नहीं। प्रसन्नता का रस जब तक नहीं आएगा तब तक कामनाएं नष्ट होगी नहीं। जो सुख-दुःख का भोग करें वह प्राणी और सुख-दुःख का सदुपयोग करे वह मानव।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
अलायक प्रबन्धक-मोहन लाल गाडनी
संपादक-लक्ष्मीलाल गाडनी
संपादन सहाय्योगी-घनश्याम मिश्र नाटौड



मुट्ठी में तकदीर हमारी

गतांक से आगे.....
बात में करामात हाथों से लकड़ी तोड़ना
बोलिये श्री राम चन्द्र जी भगवान की जय, बोलिये नृसिंह भगवान की जय, बालिये प्रहलाद भक्त की जय, मुनिराज मार्कण्डेय महाराज की जय, हर हर महादेव, शम्भु कैलाशपति भूलेमति।

नृसिंह भगवान की कृपा से जो कथा भक्तराज प्रहलाद ने श्रवण की जो कथा अजर-अमर मार्कण्डेय जी महाराज ने बड़ी कृपा करके परम पूज्य समाज सेवा में अग्रणी मनुज जी को सुनाई और मनुजजी ने जो कथा परम पूज्य, सेवा धर्म मसीहा राजमल जी भाईसाहब की कृपा से, डॉक्टर अग्रवाल साहब की अनुकम्पा से, चैनराज जी लोढ़ा साहब की दया से और पी.जी. जैन साहब के प्रभाव से पूरे विश्व तक पहुँची। आदरणीय कमला जी, प्रिय प्रशान्त जी, प्रिय वन्दना जी, आदरणीय जगदीश जी आर्य साहब, देवेन्द्र जी भैया, कल्पना बिटिया, ओजस, आस्था, महर्षि, पलक।

कई कोशिका से बने, तन में ऊत्तक होए। कार्य, माप, आकार, सब यह निर्भर होए।।

बोलिये कपिल भगवान की जय। कपिल भगवान देवहुति माता को फरमाते हैं— हे माते, मैं जब आपके गर्भ में आया, हे देवहुति माते, तब एक कोशिका से कई कोशिकाएँ बनी, बनते-बनते 75 हजार करोड़ कोशिकाएँ बनी माते। कई कोशिकाएँ मिलकर उत्तक बनाते हैं और उत्तक से अवयव बनता है। उत्तक कई कोशिकाओं का एक समूह होता है।

मिलकर जब हम कार्य करते हैं तो कार्य में उत्तमता आती है। एक पिता ने जब देखा कि मेरे बेटे आपस में मिलकर काम कम करते हैं। इनमें मदभेद हैं, इनमें झगडा होता है, पिता बड़े दुखी हुए। एक दिन चारों-पाँचों पुत्रों को बुलाया, लकड़ी का एक गट्टर पडा था। एक लकड़ी पुत्र के हाथ में दी और कहा, बेटा इसको तोड़ दो। उसने जोर लगाया और तुरन्त तोड़ दी। दूसरे पुत्र ने भी एक लकड़ी तोड़ दी। अब दस लकड़ियों के एक समूह को पिता ने अपने पुत्र को दिया और कहा, बेटा अब तोड़ो। बहुत कोशिश की, पसीना आ गया, हाथ-पैरों की सारी ताकत लगा दी लेकिन लकड़ियाँ टूटी नहीं। तब पिताजी ने कहा, देखो बेटा, मिलकर रहो। ये लकड़ियाँ एक साथ मिल गई तो इनको कोई तोड़ नहीं पा रहा है और अकेली लकड़ी को कोई भी तोड़ देता है इसलिये एकता रखिये।

आपसी एकता, आपसी मजबूती हमारा राष्ट्र आज भी महान है, कल भी महान था। एक युग में इण्डोनेशिया भी हमारा हिस्सा था, जावा, सुमात्रा, बर्मा देश, नेपाल देश, पाकिस्तान तो 1947 में अलग हुआ महाराज। बांग्लादेश तो बाद में बना, पहले पाकिस्तान का टुकड़ा बना, भारत कमजोर पड़ गया। क्यों कमजोर पड़ गया, क्योंकि हमारी एकता टूट गई।

कई लोगों ने सोचा, हम बलवान हैं। कमजोर को कहा, छुआछूत की महामारी फैल गई। बहुत बड़ी बीमारी है ये, सबसे बड़ी बीमारी हैं मनुष्य का मनुष्य से नफरत करना, इस बीमारी को मत अपनाइये। एक बार एक ऋषि ने क्रोधित होकर कहा— ऐ दुष्ट, अरे नालायक, तू मुझे छू गया, मुझे वापस स्नान करना पड़ेगा। उसने कहा, महाराज आपको तो एक बार स्नान करना पड़ेगा, मुझे तो चार बार स्नान करना पड़ेगा। उसने कहा, महाराज आपको तो एक बार स्नान करना पड़ेगा। आप मुझसे छू गये। बोले—